द्वादशः श्लोकः

गोप्युवाच— मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥१२॥

पदच्छेद— मधुप कितवबन्धो मा स्पृश अङ्घ्रिम् सपत्न्याःकुच विलुलितमाला कुङ्कुमश्मश्रुभिः नः । वहतु मधुपतिः तत् मानिनी नाम् प्रसादम् यदुसदसि विडम्ब्यम् यस्य दूतःत्वम् ईदृक् ।।

शब्दार्थ—			
मधुप	१. हे भ्रमर !	वहतु	१६. वृथा ढोते हैं
कितवबन्धो	२. धूर्त का मित्र	मधुपतिः	११. श्रीकृष्ण
मा स्पृश	८. मत छू	तत मानिनीनाम्	१२. मथुरा की मानिनीनायिकाओं का
अङ्घ्रिम्	७. पैरों को	प्रसादम्	१५. कुङ्कुमरूप प्रसाद को
सपत्न्याःकुच	४. सौत के कुचों पर	यदुसदसि	१३. यदुवंशियों की सभा में
विलुलितमाला	५. मसली गई माला के	विडम्ब्यम्	१४. उपहास करने योग्य
कुङ्कुमश्मश्रुभिः	६. कुङ्कुम से लिप्त मूछों से	यस्य दूतःत्वम्	९. जिनका दूत तू
नः ।	३. हमारी	ईदृक् ।।	१०. ऐसा है (वे)

श्लोकार्थ—हे भ्रमर ! धूर्त का मित्र ! हमारी सौत के कुचों पर मसली गई माला के कुङ्कुम से लिप्त मूंछों से पैरों को मत छू। जिनका दूत तू ऐसा है, वे श्रीकृष्ण मथुरा की मानिनी नायिकाओं का उपहास करने योग्य कुङ्कुम रूप प्रसाद को वृथा ढोते हैं ।।

त्रयोदशः श्लोकः

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥१३॥

पदच्छेद—सकृत् अधर सुधाम् स्वाम् मोहिनीम् पाययित्वा सुमनस इव सद्यः तत्यजे अस्मान् भवादृक् । परिचरति कथम् तत् पादपद्मम् तु पद्मा हि अपि बत हृतचेताः उत्तमश्लोक जल्पैः ।।

शब्दार्थ—			
सकृत्	१. उन्होंने एक बार	परिचरति	१२. सेवा करती रहती हैं
अधर सुधाम्	३. अधरामृत	कथम् तत्	१०. कैसे उनके
स्वाम् मोहिनीम्	२. अपना मादक	पादपद्मम्	११. चरण कमलों की
पाययित्वा	४. पिला कर	तु पद्मा	९. लक्ष्मी
सुमनसः इव	५. मानों फूलों से रस लेकर	हि अपि	१५. उनका भी
सद्यः	६. तत्काल उड़ जाने वाले	बत	१३. मालूम पड़ता है
तत्यजे अस्मान्	८. हमें त्याग दिया	हृतचेताः	१६. चित्त चुरा लिया है
भवादृक्	७. आपके समान	उत्तमश्लोक जल्पैः ।।	१४. श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने

श्लोकार्थ—उन्होंने एक बार अपना मादक अधरामृत पिला कर मानों फूलों से रस लेकर तत्काल उड़ जाने वाले आप के समान हमें त्याग दिया। लक्ष्मी कैसे उनके चरणों की सेवा करती रहती हैं। मालूम पड़ता है श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने उनका भी चित्त चुरा लिया है ।।

चतुर्दशः श्लोकः

किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।
विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥१४॥

पदच्छेद—किम् इह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वम् यदूनाम् अधिपतिः अगृहाणाम् अग्रतः नः पुराणम् ।
विजय सख सखीनाम् गीयताम् तत् प्रसङ्गः क्षपित कुचरुजः ते कल्पयन्ति इष्टम् इष्टाः ॥

शब्दार्थ—			
किं इह बहु	७. क्यों यहाँ बहुत	विजय सख	६ विजय के साथी श्रीकृष्ण की
षडङ्घ्रे	१. अरे भ्रमर !	सखीनाम्	१०. मथुरा वासिनी सखियों के सामने
गायसि	८. गुण-गान कर रहा है	गीयताम्	१२. गायनकर (उन्होंने)
त्वम्	२. तू	तत् प्रसङ्गः	११. उनकी लीलाओं का
यदूनाम् अधिपतिम्	६. यदुवंशियों के स्वामी का	क्षपित	१४. मिटा दिया है (वे)
अगृहाणाम्	३ घर-द्वार से रहित	कुचरुजः	१३. उनके हृदय की पीड़ा को
अग्रतः नः	४ हमारे आगे	ते कल्पयन्ति	१६. तुझे देंगी
पुराणम् ।	५. पुराने परिचित	इष्टमिष्टाः ॥	१५. प्रसन्न होकर मुह मांगी वस्तुयें

श्लोकार्थ—अरे भ्रमर ! घर-द्वार से रहित हमारे आगे पुराने परिचित यदुवंशियों के स्वामी का क्यों यहां बहुत गुण-गान कर रहा है। विजय के साथी श्रीकृष्ण की मथुरा वासिनी सखियों के सामने उनकी लीलाओं का गायन कर, उन्होंने उनके हृदय की पीड़ा को मिटा दिया है। वे प्रसन्न होकर तुझे मुँह माँगी वस्तुयें देंगी ।

पञ्चदशः श्लोकः

दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥१५॥

पदच्छेद—दिवि भुवि च रसायाम् काः स्त्रियः तत् दुरापाः कपट रुचिर हास भ्रू विजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरजः उपास्ते यस्य भूतिः वयम् का अपि च कृपणपक्षे हि उत्तम श्लोक शब्दः ॥

शब्दार्थ—			
दिविभुवि	१. स्वर्ग में पृथ्वी में	स्युः ।	१२. हैं
च रसायाम्	२. और पाताल में (ऐसी)	चरणरजः	१०. चरणों की धूलि की
काः स्त्रियः	३. कौन स्त्रियाँ हैं	उपास्ते	११. उपासना करती
तत् दुरापाः	८. भगवान् के लिये दुर्लभ हों	यस्यभूतिः	६. लक्ष्मी जिनकी
कपट रुचिर	५. कपट भरी मनोहर	वयम् का	१३. उनके लिये हम कौन हैं
हास भ्रू	६. मुसकान तथा भौंहों के	अपि च	१४. किन्तु उनका
विजृम्भस्य	७. मटकाने वाले	कृपणपक्षेहि	१६. कृपण पक्ष में ही है
याः ।	४. जो श्रीकृष्ण की	उत्तमश्लोकशब्दः	१५. उत्तम श्लोक यह नाम

श्लोकार्थ--स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में ऐसी कौन स्त्रियाँ हैं, जो भगवान् के लिये दुर्लभ हों। कपट भरी मनोहर मुसकान तथा भौंहों को मटकाने वाले जिन श्रीकृष्ण के चरणों की धूली की उपासना लक्ष्मी करती हैं, उनके लिये हम कौन हैं। किन्तु उनका उत्तम श्लोक यह नाम कृपण पक्ष में ही है ॥

षोडशः श्लोकः

विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥१६

पदच्छेद— विसृज शिरसिपादम् वेद्मि अहम चाटुकारैः अनुनय विदुषः ते अभ्येत्य दौत्यैः मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्ट अपत्य पति अन्य लोकाः व्यसृजत् अकृत चेताः किम् न सन्धेयम् अस्मिन् ॥

शब्दार्थ—

विसृज	२. मत टेक	स्वकृत इह	१०. अपने लिये यहाँ
शिरसि पादम्	१. पैरों पर सिर	विसृज	१३. त्यागने वाली हम लोगों को
वेद्मि अहम्	३. मैं जानती हूँ कि	अपत्य पति	११. सन्तान, पति तथा
चाटुकारैः	४. चापलूसी से	अन्यलोकाः	१२. दूसरे लोगों को
अनुनय	५ मनाने में	व्यसृजत्	१४. छोड़कर चले गये
विदुषः ते	५. तू पण्डित है	अकृतचेताः	९. वे अकृतज्ञ हैं
अभ्येत्य	८. आया है	किम् नु	१५. क्या
दौत्यैः	७. दूतकर्म सीखकर	सन्धेयम्	१६. सन्धि करनी चाहिये
मुकुन्दात् ।	६. भगवान् श्रीष्ण के पास से	अस्मिन् ॥	१६. उनसे

श्लोकार्थ—पैरों पर सिर मत टेक मैं जानती हूँ कि चापलूसी से मनाने में तू पण्डित है । भगवान् श्रीकृष्ण के पास से दूत कर्म सीख कर आया है । वे अकृतज्ञ हैं । अपने लिये यहाँ सन्तान, पति तथा दूसरे लोगों को त्यागने वाली हम लोगों को छोड़ कर चले गये । क्या उनसे सन्धि करनी चाहिये ॥

सप्तदशः श्लोकः

मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।
बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वाङ्क्षवद् यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः १७

पदच्छेद— मृगयुः इव कपीन्द्रम् विव्यथे लुब्ध धर्मा स्त्रियम् अकृत विरूपाम् स्त्री जितः कामयानाम् ।
वलिम् अपि बलिम् अत्त्वा आवेष्टयत् ध्वाङ्क्षवत यः तत् अलम् असित सख्यैः दुस्त्यजः तत् कथाअर्थः ॥

शब्दार्थ

मृगयुः इव	३. व्याध के समान (छिपकर)	बलिम् अपि	१२. राजा बलि को भी
कपीन्द्रम्	४. वानरराजबालि को	बलिम् अत्त्वा	११. बलि खाकर भी
विव्यथे	५. मार डाला था	आवेष्टयत्	१३. बाँध दिया था
लुब्धधर्मा	२. शिकारी	ध्वाङ्क्षवत्	१०. कौए के समान
स्त्रियम्	७. स्त्री (शूर्पणखा) को	यः तत्	१. जिन्होंने
अकृतविरूपाम्	९. विरूप कर दिया और	अलम्असितसख्यैः	१४. ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है
स्त्रीजितः	८. स्त्री के वश में होकर	दुस्त्यजः तत्	१६. छोड़ देना कठिन है
कामयानाम् ।	६. कामना करती हुई	कथा अर्थः ॥	१५. किन्तु उनकी चर्चा को

श्लोकार्थ—उन्होंने शिकारी व्याध के समान छिपकर वानरराजबालि को मार डाला था । कामना करती हुई स्त्री सूर्पणखा को स्त्री के वश में होकर विरूप कर दिया और कौए के समान बलि खाकर भी राजा बलि को बाँध दिया था । ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है । किन्तु उनकी चर्चा को छोड़ना कठिन है ॥

अष्टादशः श्लोकः

यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः ।
सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥१८॥

पदच्छेद— यत् अनुचरित लीला कर्ण पीयूष विप्रुट् सकृत् अदन विधूत द्वन्द्वधर्माः विनष्टाः ।
सपदि गृह कुटुम्बम् दीनम् उत्सृज्य दीनाः बहवः इहविहङ्गाः भिक्षुचर्याम् चरन्ति ।।

शब्दार्थ—

यत् अनुचरित	१. जिनकी की हुई	सपदि	१०. शीघ्र ही
लीला	२. लीलाओं का	गृह	११. घर और
कर्ण पीयूष	३. कर्णामृत के	कुटुम्बम् दीनम्	१२. दुःखी परिवार को
विप्रुट् सकृत्	४. एक कण का एक बार भी	उत्सृज्य	१३. छोड़ कर
अदन	५ रसास्वादन कर लेता है उसके	दीनाः बहवः	९. अकिञ्चन लोग बहुत से
विधूत	७. धुले हुये के समान	इहविहङ्गाः	१४. यहाँ पक्षियों के समान
द्वन्द्वधर्माः	६. राग-द्वेष आदि	भिक्षुचर्याम्	१५. भिक्षाटन
विनष्टाः ।	८. नष्ट हो जाते हैं (ऐसे)	चरन्ति ।।	१६. करते हैं

श्लोकार्थ—जिनकी की हुई लीलारूप कर्णामृत के एक कण का एक बार भी जो रसास्वादन कर लेता है, उसके राग-द्वेष आदि धुले हुये के समान नष्ट हो जाते हैं। ऐसे बहुत से अकिञ्चन लोग शीघ्र ही घर और दुःखी परिवार को छोड़ कर यहाँ पक्षियों के समान भिक्षाटन करते है ।।

एकोनविंशः श्लोकः

वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः ।
ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्यवार्ता ॥१९॥

पदच्छेद—वयम् ऋतम् इव जिह्म व्याहृतम् श्रद्दधानाः कुलिकरुतम् इव अज्ञाः कृष्णवध्वः हरिण्यः ।
ददृशुः असकृत् एतत् तत् नख स्पर्श तीव्र स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यताम् अन्य वार्ता ।।

शब्दार्थ— वयम्	२. हम लोगों ने (श्रीकृष्ण की)	हरिण्यः ।	८. हरिणियाँ
ऋतम् इव	३. सत्य के समान	ददृशुः असकृत्	१३. अनुभव किया
जिह्म व्याहृतम्	४. कपट भरी बातों पर	एतत् तत् नख	१०. और उनके नख
श्रद्दधानाः	५ श्रद्धा की	स्पर्शतीव्र	११. स्पर्श से तीव्र
कुलिकरुतम्	९. व्याध के गान पर विश्वास कर लेती है	स्मररुज	१२. काम पीडा का
इव	६. जैसे	उपमन्त्रिन्	१४. हे दूत ! भ्रमर
अज्ञाः	१. भोली-भाली	भण्यताम्	१५. दूसरी कोई
कृष्णवध्वः	७. कृष्णसार मृग की पत्नी	अन्य वार्तां ।।	१६. बात कहो

श्लोकार्थ—भोली-भाली हम लोगों ने श्रीकृष्ण की सत्य के समान कपट भरी बातों पर श्रद्धा की। जैसे कृष्ण सार मृग की पत्नी हरिणियाँ व्याध के गान पर विश्वास कर लेती हैं। और हमने उनके नख स्पर्श से तीव्र काम पीडा का अनुभव किया। हे दूत भ्रमर ! दूसरी कोई बात कहो ।।

विंशः श्लोकः

प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।
नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसि सौम्य श्रीर्वधूःसाकमास्ते २०

पदच्छेद—प्रियसख पुनः आगाः प्रेयसाप्रेषितः किम् वरय किम् अनुरुन्धे माननीयः असिमे अङ्ग ।
नयसि कथम् इह अस्मान् दुस्त्यज द्वन्द्वपार्श्वं सततम् उरसि सौम्य श्रीः वधूः साकम् आस्ते ।।

शब्दार्थ—			
प्रियसख	१. प्रिय मित्र ! तुम	नयसि	११. ले चलना चाहते हो
पुनः गाः	२. फिर लौट आये हो	कथम् इह	९. क्या वहाँ पर
प्रेयसाप्रेषितः	४. प्रियतम ने भेजा है	अस्मान्	१०. हमें
किम्	३. क्या	दुस्त्यज	१३. लौटना कठिन है
वरय	६. माँग लो	द्वन्द्वपार्श्वं	१२. उनके पास से
किम् अनुरुन्धे	५. क्या चाहते हो	सततम् उरसि	१५ उनके वक्षः स्थल पर सदा
माननीयः असि	८. माननीय हो	सौम्य श्रीःवधूः	१४. सौम्य उनकी पत्नी लक्ष्मी
मे अङ्ग ।	७ मेरे प्रिय भ्रमर तुम	साकम् आस्ते ।।	१६. साथ रहती हैं

श्लोकार्थ—प्रिय मित्र ! तुम फिर लौट आये हो । क्या प्रियतम ने भेजा है । क्या चाहते हो माँग लो । मेरे प्रिय भ्रमर ! तुम माननीय हो । क्या वहाँ पर हमें ले चलना चाहते हो । उनके पास से लौटना कठिन है । सौम्य ! उनकी पत्नी लक्ष्मी उनके वक्षः स्थल पर सदा साथ रहती हैं ।।

एकविंशः श्लोकः

अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनाऽऽस्ते स्मरति स पितृगेहान्सौम्य बन्धूंश्च गोपान्
क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१

पदच्छेद—अपि बत मधुपुर्याम् आर्यपुत्र अधुना आस्ते स्मरति सः पितृगेहान् सौम्य बन्धून् च गोपान् ।
क्वचित् अपि सः कथाः नः किङ्करीणाम् गृणीते भुजम् अगुरु सुगन्धम् मूर्ध्नि अधास्यत् कदा नु ।।

शब्दार्थ—			
अपि बत	२. अच्छा क्या	क्वचित्	१२. कभी कुछ
मधुपुर्याम्	५. मधुपुरी में	अपि सः	१० और वे
आर्यपुत्र	३. आर्य पुत्र श्रीकृष्ण	कथाः	१३. बातें
अधुना	४. इस समय	नः किङ्करीणाम्	११. हम दासियों की
आस्ते	६. हैं (क्या)	गृणीते	१४. करते हैं क्या
स्मरति	९ स्मरण करते हैं	भुजम्	१७. भुजा (हमारे)
सः पितृगेहान्	७ वे पिता के घरों	अगुरु सुगन्धम्	१६. अगर के सुगन्ध के समान
सौम्य	१. हे सौम्य !	मूर्ध्निं अधास्यत्	१८. सिर पर रखेंगे
बन्धून् च गोपान् ।	८. बन्धुओं और गौओं का	कदा नु ।।	१५. कब वे अपनी

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! अच्छा, आर्य पुत्र श्रीकृष्ण इस समय मधुपुरी में हैं क्या ? वे पिता के घरों बन्धुओं और गौओं को स्मरण करते हैं । और वे हम दासियों की कभी कुछ बातें करते हैं क्या ? कब वे अपनी अगर के सुगन्ध के समान भुजा हमारे सिर पर रखेंगे ।।